REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2022

अमृतलाल नागर के उपन्यास की अन्तर्वस्तु में निहित जन चेतना का अध्ययन

निर्मला साहू[1] & डॉ. उर्मिला वर्मा[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.).
[2]प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.).

सारांश –

लोकप्रिय रचनाकार जनता से केवल सीखता ही नहीं है, उसे सिखाता भी है। रचनाकार के लिए सीखने–सिखाने का यह काम निरन्तर चलता है। जनता और जनवादी रचनाकार के बीच यह संबंध द्वन्द्वात्मक होता है। चूँकि जनता रचना में अपने जीवन का उद्देश्य देखना चाहती है इसलिए रचना की लोकप्रियता 'रूप' से अधिक 'अन्तर्वस्तु' पर निर्भर होती है।

मुख्य शब्द – अमृतलाल नागर, उपन्यास, जन चेतना एवं लोकप्रियता।

प्रस्तावना –

अमृतलाल नागर का पहला उपन्यास 'महाकाल' या 'भूख' है, जो सन् 1943 ई. के भीषण अकालजन्य स्थितियों को उद्घाटित कर देता है। पहले 'महाकाल' नाम से प्रकाश में आने के पश्चात् यह 'भूख' नाम से जाना जाने लगा। यह ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित होकर भी सामाजिक यथार्थ को हूबहू या यथार्थ रूप में हमारे सामने रख देता है। अकालजन्य भयंकर तथा कारुणिक अवस्था सम्पूर्ण प्रबुद्ध तथा बुद्धिजीवी मानस को झकझोर कर रख देता है। इस उपन्यास की अन्तर्वस्तु भूख से बिलबिलाते लोगों की कारुणिक गाथा प्रस्तुत करता है। पेट की ज्वाला को शांत करने के लिए भूख से जनमी अनैतिक एवं अमानवीय समस्याओं को इसमें देखा जा सकता है। इसमें मानव की दानवी प्रवृत्ति उभरकर सामने आ जाती है जिससे मानवता का मस्तक लज्जा से झुक जाता है।

भूख उपन्यास में 'पाँच गोपाल' के माध्यम से मोहनपुर गाँव में आये अकाल की दर्दनाक आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत किया गया है। वह सुशिक्षित तथा बुद्धिजीवी होकर भी यथार्थ स्थिति का सामना कर सकने में असक्षम सिद्ध होता है। उसके उच्च मूल्य चरमराकर टूटने लगते हैं क्योंकि उसकी आँखों के सामने सारा गाँव भूख से व्याकुल होकर अनाज की एक–एक कनी के लिए तरसते, निःसहाय अवस्था में रोते–बिलखते दिखाई देते हैं। वह यह अनुभव करता है कि व्यक्ति भूख मिटाने का प्रयास करते हैं। स्त्रियों एवं बच्चों की दशा इस विभीषिका के कारण और भी कारुणिक हो जाती है। व्यक्ति–व्यक्ति के बीच की मानवीय संवेदना का ह्रास होता दिखाई देता है। पति रूपी रक्षक ही उसका भक्षक बनकर उसे वेश्या

बनने के लिए विवश करता है। स्त्रियों पर अनैतिकता का आरोप लगाकर घर से जाने के लिए विवश कर दिया जाता है। इस प्राकृतिक विपदा का फायदा स्वार्थी महाजन वर्ग उठाता है। उसकी स्वार्थपरता के कारण गाँव वालों की दशा बद से बदतर होती चली जा रही थी। 'पाँचू', मोनाई बनिया के हाथों स्कूल की डिस्कों को बेचने के लिए विवश हो जाता है किन्तु उसका ईमान उसे धिक्कारने लगता है। वह हतप्रभ होकर सोचता है "खुदी के लिए सारी दुनियाँ तबाह हुई जा रही है, लेकिन यह खुदी है क्या? और क्यों है? अपने अस्तित्व की चेतना को मनुष्य सर्वव्यापी और सामूहिक रूप से क्यों नहीं देखता? दुनिया से अलग रहकर मैं अपनी असलियत का अनुभव क्यों कर सकता हूँ।"[1] उसकी मानसिक पीड़ा स्वयं तक सीमित न रहकर सामूहिक रूप धारण कर लेती है। पाँचू इस पीड़ा को सह नहीं पाता है तथा अकर्मण्यता का शिकार होकर पलायनवादी हो जाती है किन्तु अपने ही नवजात शिशु को देखकर वह नयी आशा, आस्था से भर जाता है और सोचता है कि 'हाँ, मैं लड़ूँगा।''[2]

इस प्रकार उपन्यास की अन्तर्वस्तु भूख की विशद अवस्था के साथ ही मानवीय स्वार्थपरता को उघाड़ कर रख देता है। इसमें एक साथ 'भूख की पीड़ा सहते लोग हैं तो स्वार्थ सिद्ध करने वाले पूँजीपति, महाजन वर्ग भी। यह उपन्यास लेखकीय जनबोध का आश्रय प्राप्त कर पाठक को द्रवित कर देता है।

डॉ. सत्यपाल चुघ के शब्दों में – ''महाकाल के लेखक ने अकाल की द्रावक करुण स्थितियों से पात्रों के आँसू ही नहीं गिराए, उनके विचारों को उत्तेजित कर उपयोगी चिंतन भी कराया है जिससे इन उपन्यास में भावों के साथ विचारों, मार्मिकता के साथ मर्म का भी समन्वय हो गया है।''[3]

'बूँद और समुद्र' नागर जी का तीसरा महत्वपूर्ण, वृहदकाय उपन्यास है। इसमें यथार्थता के दर्शन पात्रों एवं उनकी क्रियाकलापों में होते हैं। इसकी अन्तर्वस्तु प्रतीकात्मकता का सहारा लेकर और भी अर्थ एवं भाव पूर्ण हो जाती है। इसमें 'बूँद' व्यक्ति के तथा 'समुद्र' समाज के प्रतीक के रूप में आया। इसमें व्यक्ति तथा समाज के समन्वय की भावना व्यक्त हुई है।

उपन्यास की अन्तर्वस्तु ताई, वनकन्या, सज्जन, महिपाल, कर्नल आदि पात्रों द्वारा गढ़ी गयी है। 'ताई' का चरित्र विरोधी गुणों से युक्त है। जहाँ वह मनुष्य के बच्चों को मारने के लिए जादू–टोना, तंत्र–मंत्र करती है वहीं बिल्ली के बच्चों के प्रति अपरिमित प्यार उसके व्यक्तित्व को मानवीयता से युक्त बनाता है।

नागर के उपन्यास में कहीं दहेज की समस्या है, तो कहीं राजनीति और वोट का षड्यंत्र भी। वोट की राजनीति से लोग परिचित होकर उससे नफरत करने लगते हैं– ''भाड़ में जाए वोट! मैं तो इन सबसे नफरत करता हूँ।''[4] इसमें राजनीति तथा सामाजिक षड्यंत्र के साथ ही व्यक्ति के रूढ़ संस्कारों को भी प्रस्तुत किया गया है। ये रूढ़ संस्कार तथा अंधविश्वास हमें अपनी जड़ों से काट रहे हैं। हमारे समाज में व्याप्त इन्हीं जड़ मान्यताओं की बात करते हुए सज्जन कहता है– ''हमारा देश विचारों और रीति–रिवाजों का एक महान अजायबघर है।''[5]

उपन्यास में समस्याओं की जनबोध अभिव्यक्ति करते हुए व्यक्ति और समाज के अलग–अलग अस्तित्त्व का महत्व स्थापित कर दोनों के समुचित संतुलन द्वारा हमारे आत्मविश्वास और आस्था को बनाए रखने का प्रयत्न किया गया है। दिनों–दिन ह्रास होने वाले मानवीय मूल्यों पर विचार करते हुए महिपाल कहता है– ''भारतीय यह भू गया है कि वह भारतीय है; वह कांग्रेसी है, सोशलिस्ट, जनसंघी, कम्यूनिस्ट, अकाली है, वह यह–सिद्ध कवि, कलाकार, नेता, डॉक्टर, बैरिस्टर, अफसर या समाज में 'कुछ' है, मगर अधिकांश में भारतीय नहीं मानव भी? नहीं।''[6]

भारतीय समाज में इसी मानवीय मूल्यों के ह्रास की यथार्थ तस्वीर उकेरी गयी है। समाज से खोते विश्वास को फिर से स्थापित करने के लिए व्यक्ति तथा समाज के समन्वय पर बल दिया गया है। इस बात को स्वीकार करते हुए सज्जन कहता है– ''मनुष्य का आत्मविश्वास जागना चाहिए। उसके जीवन में आस्था जागनी चाहिए। मनुष्य को दूसरे के सुख–दुःख में अपना सुख–दुःख मानना चाहिए। विचारों के भेद स्वस्थ द्वन्द्व होता है और उससे उत्तरोत्तर उसका समन्वयात्मक विकास भी। पर शर्त यह है कि सुख–दुःख में व्यक्ति से अटूट संबंध बना रहे– जैसे बूँद से बूँद जुड़ी रहती है– लहरों से लहरे। लहरों से समुद्र बनता है– इस तरह बूँद में समुद्र बनता है– इस तहर बूँद में समुद्र समाया है।''[7]

अतः जैसे बूँद से बूँद मिलकर समुद्र की संरचना करती है, वैसे ही व्यक्ति से व्यक्ति का जुड़ाव समाज की संरचना करता है। फिर भी व्यक्ति का महत्व कहीं भी समाप्त नहीं होता। बाबा रामजी के शब्दों में – ''हर बूँद का महत्व है क्योंकि वही तो अनन्त सागर है। एक बूँद भी व्यर्थ क्यों जायें, उसका सदुपयोग करो।''[8]

व्यक्ति का समाज विकास में योगदान करना भी आवश्यक होता है। यही कारण है कि नागर जी शब्दों में ''व्यक्ति–व्यक्ति अवश्य रहे, पर उसके व्यक्तिवादी चिंतन में भी सामाजिक दृष्टिकोण का रहना अनिवार्य हो।''[9] इसी चिंतन से प्रभावित होकर सज्जन और वनकन्या नई दिशा की ओर कदम बढ़ाते हैं।

विश्लेषण –

प्रस्तुत उपन्यास का प्रत्येक चरित्र एक–दूसरे को शतरंज का मोहरा बनाकर इस्तेमाल करने का षड्यंत्र करता है, फिर भी कुछ चरित्र अपने–आप में भारतीय संस्कृति को बचाए रखने का प्रयास करते हैं। नसीरुद्दीन का चरित्र अवध साम्राज्य के धराशायी होने का प्रतीक बन जाता है।

बादशाह बेगम अपने स्वार्थ के लिए पति, पुत्र एवं पौत्र को विलासी बना देती है और उसका साम्राज्य योग्य उत्तराधिकारी के अभाव के कारण अंग्रेजों द्वारा हड़प लिया जाता है। इतना होने पर भी नागर जी कहीं भी मानवीय आत्मविश्वास की कमी होने नहीं देते हैं। अतः उपन्यास की अन्तर्वस्तु जीवन–यथार्थ से सम्पृक्त होकर चलती है। इसमें मानवीय संवेदना का लेश–मात्र भी अभाव नहीं दिखाई देता है।

ये कोठेवालियाँ में संस्मरण, साक्षात्कार, खोज–पद्धतियों को अपनाकार सम्प्रेषणीयता और मार्मिकता उपस्थित कर दी गयी है। इसकी औपन्यासिकता की बात स्वीकार करते हुए डॉ. सुरेश सिन्हा कहते हैं– ''इसमें अनेक रेखाचित्रों के माध्यम से उपन्यास का ताना–बाना संगुफित किया गया है जिसे नागर जी की कलात्मक प्रौढ़ता को अत्यन्त सफलता के साथ प्रस्तुत किया है। लेखक की यथार्थवादी दृष्टि से उपन्यास की स्वाभाविकता एवं प्रभावशीलता में और भी वृद्धि की है। यद्यपि कुछ लोगों को इसे उपन्यास कहने में संकोच होगा, पर यह शिल्प का अभिनव प्रयोग ही है। आज उपन्यास का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है। केवल बँधी–बँधाई लम्बी कथा को उपन्यास स्वीकार करने की सीमा से साहित्य बहुत आगे आ गया है। अतः इस रचना को भी निःसंकोच उपन्यास स्वीकार करना होगा। यह उपन्यास की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।''[10]

अपनी इस रचना में नागर जी ने सामग्री संकलन की जिस पद्धति का उपयोग किया, उसे उन्होंने 'फील्ड वर्क' का नाम दिया। उनका कहना था कि ''इस विषय पर क्षेत्रीय खोज वर्क'' का नाम दिया। उनका कहना था कि ''इस विषय का क्षेत्रीय खोज–कार्य (फील्ड वर्क) के रूप में हिन्दी में यह शायद पहली ही पुस्तक है।''[11] इस प्रकार यह उपन्यास वेश्या जीवन सत्य की जन चेतना अभिव्यक्ति करने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास है।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अपील पर अपने पत्रकार मित्र पंडित रूद्रनारायण शुक्ल की अखबारों में छपी विज्ञप्ति से प्राप्त हुई। यह उपन्यास वेश्या–जीवन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म पहलू पर प्रकाश डालता है। इसकी केन्द्रीय अन्तर्वस्तु पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है– ''आज के भारतीय समाज में वेश्याओं के जीवन का हिन्दी या किसी भी अन्य भारतीय भाषा में यह पहला विश्लेषणात्मक अध्ययन है। श्री अमृतलाल नागर ने बहुत समीप से और बहुत ही सहानुभूति से इस जीवन को देखा, जिसे आमतौर पर रंगीन और ऐयाशी से पूर्ण समझा जाता है, लेकिन जो संघर्ष और निराशाओं से वैसे ही भरा हुआ है जैसे कि अन्य सामान्य जीवन। इस अध्ययन में किसी उपन्यास से भी अधिक रोचकता है और सत्य पर आधारित होने के कारण इसी प्रमाणिकता अद्वितीय है।''[12]

'सुहाग के नूपर' नारी जीवन की समस्याओं की जनचेतना अभिव्यक्ति करने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह दक्षिण भारतीय संस्कृति पर आधारित होकर भी सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के विविध मानदण्डों, नैतिक मूल्यों एवं परम्पराओं को अपने अंदर समाहित किए हुए हैं। इसमें 'पत्नी बनाम वेश्या' की किए हुए परम्परागत समस्या को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें कुलवधू के सुहाग के नूपुर तथा नगरवधू के घुंघरुवों के बीच के संघर्ष द्वारा नारी विवशता को स्वर प्रदान किया गया है।

उक्त वर्णित उपन्यास की अन्तर्वस्तु कोवलन, कन्नगी और माधवी के इर्द–गिर्द घूमती है। कुलवधू कन्नगी पति द्वारा प्रवंचिता है तो नगरवधू माधवी समाज द्वारा प्रताड़ित। माधवी वेश्या होते हुए भी अपने एकनिष्ठ प्रेम द्वारा माधवी वेश्या होते हुए भी अपने एकनिष्ठ प्रेम द्वारा समाज में पत्नी का पद प्राप्त करना चाहती है। वह अपनी पुत्री को उसके पिता के गौरवशाली परम्परा में स्थान दिलाना चाहती है, किन्तु समाज उसके एकनिष्ठ प्रेम को अस्वीकार कर देता है। समाज की अस्वीकृति के कारण वह ईर्ष्यालु और हिंसक बन जाती है तथा कुलवधू के सुहाग के नूपुर को पाने की तुच्छ भावना से भर उठती है। पुरुष वर्ग द्वारा अपने अधिकार की लड़ाई लड़ते हुए वह कहती है– ''पुरुष जाति के स्वार्थ और दम्भ भरी मूखर्ता से ही हमारे पापों

का उदय होता है। उसके स्वार्थ के कारण ही उसका अर्धांग–नारी जाति पीड़ित है। एकांगी दृष्टिकोण से सोचने के कारण ही वह स्वयं ही झकोले खाता है और खाता रहेगा। नारी के रूप में न्याय रो रहा है, महाकवि! उसके आँसुओं में अग्नि प्रलय भी समाई है और जल प्रलय भी।''[13]

अतः माधवी के ये कथन न सिर्फ नारी बल्कि पुरुष की यथार्थ स्थिति को भी सामने रख देती है। वेश्या, नारी होकर भी नारी की गरिमा से वंचित है। वह केवल मात्र पुरुष के मनोरंजन का एक साधन है। पुरुष की स्वार्थपरता ही उसे वेश्या बनने को मजबूर करती है। कारण है कि वह पुरुष वर्ग को धिक्कारती है तथा अपनी व्यथा कथा कहती है– ''कोई यह नहीं देखता कि वेश्या स्वयं अपने ही से घृणा करने पर बाध्य है, क्योंकि परम्परा से घृणा के संस्कारों में पाली जाती है जो स्त्री किसी भी अन्य गृहिणी की तरह कामकाजी और जग–संचालन का भार वहन करने के योग्य थी, उसे पुरुषों की विलास–वासना का साधनमात्र बनाकर समाज में निक्कमा छोड़ दिया जाता है। फिर क्यों न वह समाज से घृणा करे, क्यो न पूरी लगन और सच्चाई के साथ समाज का सर्वनाश करे? उसे पूरा अधिकार है।''[14] नारी पीड़ा की इसी जनचेतना की अभिव्यक्ति नागर जी ने अपने इस उपन्यास में किया है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः अमृतलाल नागर के उपन्यासों की अन्तर्वस्तु मानवीय संवेदना, मानवीय आस्था, सादृश्य विशिष्टता तथा उद्देश्यगत व्यापकता का समावेश जन–चेतना को नयी अर्थवत्ता प्रदान करता है। इस प्रकार यह उपन्यास उस काल के समाज की पतित एवं पतनगामी अवस्था को उजागर करता है, जिसमें नारी की खरीद–फरोख्त हुआ करती थी। इसमें विलासिता के पंक में डूबे पुरुष समाज की अनैतिकता एवं मर्यादाहीनता को भी चित्रित किया गया है।

संदर्भ –

1 अमृतलाल नागर – भूख, पृष्ठ 155
2 अमृतलाल नागर – भूख, पृष्ठ 221
3 डॉ. सत्यपाल चुघ – आस्था के प्रहरी, पृष्ठ 18
4 अमृतलाल नागर – बूँद और समुद्र, पृष्ठ 79
5 अमृतलाल नागर – बूँद और समुद्र, पृष्ठ 374
6 अमृतलाल नागर – बूँद और समुद्र, पृष्ठ 375
7 अमृतलाल नागर – बूँद और समुद्र, पृष्ठ 376
8 अमृतलाल नागर – बूँद और समुद्र, पृष्ठ 369
9 अमृतलाल नागर – बूँद और समुद्र, पृष्ठ 373
10 डॉ. सुरेश सिन्हा – हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास, पृष्ठ 509
11 अमृतलाल नागर – ये कोठेवालियाँ (प्रस्तावना), पृष्ठ 8
12 अमृतलाल नागर – ये कोठेवालियाँ, फ्लैप
13 अमृतलाल नागर – सुहाग के नूपुर, पृष्ठ 267
14 अमृतलाल नागर – सुहाग के नूपुर, पृष्ठ 234